समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Tuesday, 18 August 2026

राहुल गांधी के विदेश दौरे और बयान ने राजनीति मे मंचाई हलचल, किरेन रिजिजू ने जताया विरोध

Publisher

Published on 06 Oct 2025

कांग्रेस नेता राहुल गांधी के हाल के विदेश दौरे और उनके बयानों ने एक बार फिर से भारतीय राजनीतिक गलियारों में हलचल पैदा कर दी है। कोलंबिया में आयोजित अपने दौरे के दौरान राहुल गांधी ने भारत में लोकतंत्र और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को लेकर कुछ विवादास्पद बयान दिए। इन बयानों पर सत्तारूढ़ दल के नेताओं ने कड़ा एतराज जताया और इसे देश विरोधी प्रयासों के रूप में देखा।

केंद्रीय मंत्री और भाजपा नेता किरेन रिजिजू ने राहुल गांधी के बयान को गंभीर बताते हुए कहा कि एक सांसद का काम देश की छवि को अंतरराष्ट्रीय मंच पर बिगाड़ना नहीं होता। रिजिजू ने कहा कि राहुल गांधी ने विदेश में जाकर ऐसे बयान दिए हैं, जो भारत की लोकतांत्रिक संस्थाओं और शासन व्यवस्था पर प्रश्न उठाते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि यह पहला मामला नहीं है जब राहुल गांधी ने विदेशी मंचों पर भारत के खिलाफ बयानबाजी की है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि राहुल गांधी का यह दौरा और उनके बयानों का मकसद विदेशों में भारतीय राजनीति पर ध्यान आकर्षित करना हो सकता है। हालांकि, भाजपा नेताओं का तर्क है कि ऐसे बयान देश की अंतरराष्ट्रीय छवि को नुकसान पहुंचा सकते हैं और इसे गंभीरता से लिया जाना चाहिए।

राहुल गांधी के समर्थकों का कहना है कि उनके बयानों का उद्देश्य लोकतंत्र और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर बहस को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लाना था। उनके अनुसार, यह किसी भी देश के लिए सामान्य प्रक्रिया है कि विपक्षी नेता लोकतंत्र और शासन प्रणाली पर सवाल उठा सकते हैं। समर्थकों का कहना है कि राहुल गांधी ने केवल भारत में मौजूदा परिस्थितियों पर अपने विचार साझा किए हैं और इसे राजनीतिक विरोध का हिस्सा माना जाना चाहिए।

वहीं, विपक्षी दल और सत्तारूढ़ भाजपा ने इसे राजनीतिक अवसर के रूप में लिया और राहुल गांधी पर देश विरोधी गतिविधियों का

आरोप लगाया। केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा कि भारत के सांसदों को अंतरराष्ट्रीय मंच पर देश की आलोचना करने के बजाय सुधारात्मक और सकारात्मक पहल की ओर ध्यान देना चाहिए।

राहुल गांधी के विदेश दौरे के दौरान किए गए बयानों ने सोशल मीडिया और समाचार चैनलों पर भी बहस छेड़ दी है। कई लोग उनका समर्थन कर रहे हैं और इसे लोकतंत्र की मजबूती का संकेत बता रहे हैं, जबकि कई लोग इसे देश की छवि पर सवाल उठाने वाला कदम बता रहे हैं।

राजनीतिक विश्लेषक यह मानते हैं कि इस मामले में दोनों पक्षों की स्थिति स्पष्ट है। एक ओर विपक्ष यह मानता है कि लोकतंत्र में आलोचना और सवाल उठाना लोकतंत्र का हिस्सा है, जबकि दूसरी ओर सत्तारूढ़ दल इसे देश के खिलाफ बयानबाजी मान रहा है। इस बहस ने देश के राजनीतिक वातावरण को गर्मा दिया है और आने वाले समय में इस पर और बयानबाजी की संभावना है।

कोलंबिया यात्रा के दौरान राहुल गांधी ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और प्रेस की स्वतंत्रता पर चर्चा करते हुए कहा कि यह लोकतंत्र की मूलभूत नींव है। उन्होंने यह भी कहा कि लोकतंत्र तभी मजबूत रहेगा जब नागरिक स्वतंत्र और निष्पक्ष रूप से अपनी राय रख सकें। भाजपा नेताओं ने इसे भारतीय लोकतंत्र के खिलाफ बताया और कहा कि विदेश में इस प्रकार के बयान देने से देश की छवि को नुकसान हो सकता है।

राजनीतिक समीक्षक मानते हैं कि राहुल गांधी के इस दौरे और बयान ने आगामी चुनावी रणनीतियों पर भी असर डाला है। विपक्षी दल इसे भारतीय लोकतंत्र की मजबूती और संवेदनशील मुद्दों को अंतरराष्ट्रीय मंच पर लाने का उदाहरण बता रहे हैं। वहीं सत्तारूढ़ दल इसे राजनीतिक बयानबाजी और देश की छवि को कमजोर करने वाला कदम मान रहा है।

इस पूरे विवाद ने भारतीय राजनीति में नई बहस को जन्म दिया है। नेताओं, विश्लेषकों और नागरिकों के बीच यह सवाल उठ रहा है कि क्या विपक्षी नेताओं का अधिकार है कि वे विदेशों में जाकर देश के राजनीतिक और सामाजिक मामलों पर अपनी राय साझा करें, या इसे देश विरोधी गतिविधि के रूप में देखा जाना चाहिए।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Publisher, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.